Amire Ahle Sunnat Se Ghause Paak Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 270
Weekly Booklet : 270

अमीरे अहले सुन्नत से

ग़ौसे पाक

के बारे में सुवाल जवाब

सफ़हात 21

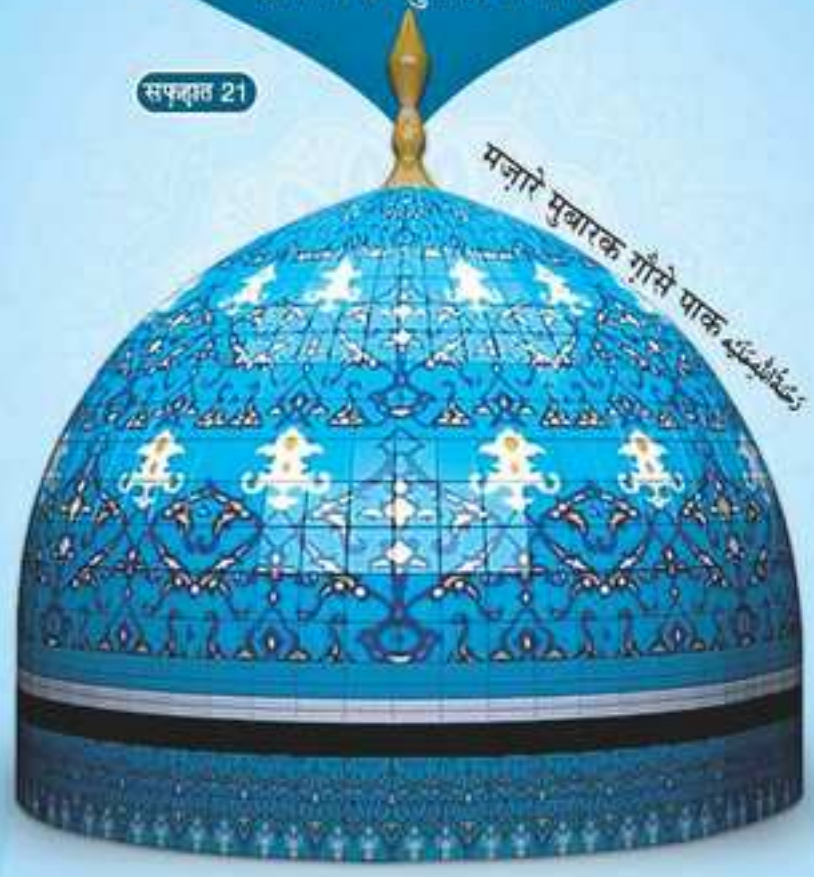

ग़ौसे पाक के वालिद साहिब की शान	08
"औलिया की गरदनों पर क़दम" का मतलब	10
ग़ौसे पाक की ग़रीबों से महब्बत	12
घर में ग़ौसे पाक की तस्वीर लगाना कैसा ?	17

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से ग़ौसे पाक के बारे में सुवाल जवाब**
सिने त़बाअ़त : **1444** हि., (**2022** ई.)
ता'दाद : 000
नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''अमीरे अहले सुन्नत से ग़ौसे पाक के बारे में सुवाल जवाब''** मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है।

अमीरे अहले सुन्नत से ग़ौसे पाक के बारे में सुवाल जवाब

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत या अल्लाह पाक ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला : **''अमीरे अहले सुन्नत से ग़ौसे पाक के बारे में सुवाल जवाब''** पढ़ या सुन ले उसे ग़ौसे पाक के नक़्शे क़दम पर चला, नेक बना और उस की बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस की शफ़ाअ़त फ़रमाऊंगा। (القول البدیع، ص117)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की विलादते मुबारका कब हुई ?

जवाब : मेरे मुर्शिद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه रमज़ानुल मुबारक की पहली तारीख़ को पीर के दिन सुब्हे सादिक़ के वक़्त दुन्या में जल्वा गर हुए, उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के होंट आहिस्ता आहिस्ता हिल रहे थे और ज़बान पर **''अल्लाह, अल्लाह''** जारी था। (الحقائق فی الحدائق، ص139) आप की विलादत चूंकि रमज़ानुल मुबारक में हुई इस लिये आप ने पहले दिन से

ही रोज़ा रखा। आप सह़री से ले कर इफ़्तार तक या'नी सुब्ह़े सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक अपनी अम्मीजान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا का दूध न पीते थे। चुनान्चे ग़ौसुस्सक़लैन, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : जब मेरा बेटा अ़ब्दुल क़ादिर पैदा हुवा तो रमज़ान शरीफ़ में दिन भर दूध न पीता था।

(بہجۃ الاسرار، ص172) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/426)

ग़ौसे आ'ज़म मुत्तक़ी हर आन में छोड़ा मां का दूध भी रमज़ान में

सुवाल : सुना है कि ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी वालिदए माजिदा के पेट में ही वालिदए माजिदा की छींक का जवाब देते थे ?

जवाब : जी हां। मेरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब अपनी मां के पेट में थे तो जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अम्मीजान को छींक आती और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहतीं तो आप अपनी अम्मीजान के पेट में जवाबन : يَرْحَمُكِ الله कहते। (الحقائق فی الحدائق، ص139) आज कल तो बड़े बड़ों को يَرْحَمُكَ الله कहना नहीं आता होगा। छींक के जवाब में औ़रत के लिये يَرْحَمُكِ الله और मर्द के लिये يَرْحَمُكَ الله कहेंगे। मेरे मुर्शिद, ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मां के पेट में भी मसाइल जानते थे क्यूं कि आप पैदाइशी वली थे। हमारी ह़ालत येह है कि हमें छींक आने पर क्या करना है और छींक का जवाब सुन कर क्या करना है कुछ भी पता नहीं होता और हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत छींक पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه नहीं कहती ह़ालां कि येह सुन्नत है बल्कि छींक आने पर **अल्लाह** की ह़म्द करने या'नी اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहने को तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में त़ह़त़ावी के ह़वाले से सुन्नते मुअक्कदा लिखा है। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तल आयह : 1, स. 3) तजरिबा है कि बा'ज़ लोग ऐसे होते हैं जिन की छींक

आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहने की आ़दत पक्की हो जाती है, अगर उन्हें बार बार बोलो तब भी वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه नहीं कहते। छींक का जवाब देना इतनी आवाज़ से कि छींकने वाला सुन ले वाजिब है अगर कोई नहीं देगा तो गुनाहगार होगा। (ردالمحتار،9/683ملتقطاً) मगर लोग जवाब नहीं देते और न ही उन्हें इस के बारे में पता होता है। मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को मां के पेट में भी छींक के जवाब का पता था ह़ालां कि आप पर येह वाजिब भी नहीं था कि ना बालिग़ पर वाजिब नहीं होता, ना बालिग़ ही क्या ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तो अभी मां के पेट में ही थे, येह ग़ौसे पाक की करामत थी और **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से येह बताना था कि आने वाला कोई आ़म शख़्स नहीं बल्कि वलियों का सरदार है। बहर ह़ाल जब छींक आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना चाहिये और जो मुसल्मान اَلْحَمْدُ لِلّٰه सुने तो उस पर "يَرْحَمُكَ اللّٰه" कहना वाजिब हो जाएगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/424, 425)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना अफ़्ज़ल दुआ़ है

ह़म्द बयान करने के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना निहायत ही जामेअ़ है और इस के बारे में ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया : اَفْضَلُ الدُّعَاءِ اَلْحَمْدُ لِلّٰه या'नी अफ़्ज़ल दुआ़ اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना है। (ترمذی،5/248،حدیث:3394) बेहतर येह है कि छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن या اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे और सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन "يَرْحَمُكَ اللّٰه" या'नी **अल्लाह** तुझ पर रह़्म फ़रमाए" कहे और येह इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला सुन ले, फ़क़त़ दिल में "يَرْحَمُكَ اللّٰه" कहना काफ़ी नहीं है। (ردالمحتار،9/683-684ماخوذاً) जवाब सुन कर छींकने वाला "يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ" या'नी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए" या "يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ" या'नी **अल्लाह**

पाक तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे" कहे। (فتاوٰی ہندیہ، 5/326) और येह कहना उस के लिये मुस्तह़ब या'नी सवाब का काम है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 320) अगर नहीं कहेगा तो गुनाहगार नहीं होगा। अगर इन दो दुआ़ओं में से कोई भी एक दुआ़ कह लेगा तो मुस्तह़ब अदा हो जाएगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/425)

सुवाल : ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (के बचपन) का कोई वाक़िआ़ सुना दीजिये।

जवाब : हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म सय्यिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मैं छोटा था तो ह़ज के दिनों में मुझे जंगल जाना पड़ा, वहां मैं एक बैल के पीछे पीछे चलने लगा जैसे बच्चे आ़म तौ़र पर इस त़रह़ करते हैं। उस बैल ने मेरी त़रफ़ देख कर कहा : ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! तुम्हें इस क़िस्म के कामों के लिये पैदा नहीं किया गया। मैं घबरा कर घर वापस आ गया और अम्मीजान से अ़र्ज़ की : अम्मीजान ! आप मुझे मुकम्मल तौ़र पर राहे ख़ुदा में बग़दाद जाने दें ताकि मैं वहां जा कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करूं और नेक बन्दों को देख सकूं। अम्मीजान ने मुझ से इस की वज्ह पूछी तो मैं ने बैल वाला वाक़िआ़ सुना दिया, येह सुन कर अम्मीजान की आंखों में आंसू आ गए और मेरे अब्बूजान के माल से जो मेरा ह़िस्सा था वोह मेरे पास ले आईं या'नी 80 सोने के सिक्के, मैं ने उन में से 40 सोने के सिक्के ले लिये और बाक़ी 40 अपने भाई के लिये छोड़ दिये, अम्मीजान ने इस रक़म को मेरी क़मीस में सी दिया और बग़दाद जाने की इजाज़त देते हुए मुझे हर ह़ाल में सच बोलने की नसीह़त फ़रमाई और फ़रमाया : बेटा मैं तुझे **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये ख़ुद से दूर कर रही हूं और अब मुझे तुम्हारा चेहरा क़ियामत के दिन ही देखना नसीब होगा। (بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ، ص168-167)

इस ह़िकायत से पता चला कि हमारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बचपन ही में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का शौक़ हो गया था, इसी वज्ह से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये अपनी अम्मीजान से इजाज़त ली और अम्मीजान ने भी ज़िन्दगी भर के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र करने की इजाज़त दे दी। येह एक ऐसा सच्चा वाक़िआ़ है जिस में हर मां और हर बच्चे के लिये बेहतरीन दर्स है। हमें भी इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना चाहिये।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/283, 284)

सुवाल : पीराने पीर, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का हुल्या मुबारक कैसा था ?

जवाब : बहजतुल असरार शरीफ़ के ह़वाले से ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन क़ुदामा मक़्दिसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हमारे इमाम शैख़ुल इस्लाम मुह़्यिुद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ज़ईफ़ुल बदन या'नी ज़ाहिरी त़ौर पर कमज़ोर बदन वाले, दरमियाना क़द, फ़राख़ सीना, चोड़ी दाढ़ी, ऊंची गरदन, गन्दुमी रंग, मिले हुए अब्रू, सियाह आंखें, बुलन्द आवाज़ और वाफ़िर इ़ल्मो फ़ज़्ल वाले थे या'नी आप बहुत बड़े आ़लिम और मुफ़्ती भी थे।

(بہجۃ الاسرار، ص174) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 180, स. 8)

सुवाल : हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अ़रबी थे या अ़जमी ?

जवाब : हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अ़जमी थे। (بہجۃ الاسرار، ص58ماخوذاً) याद रहे ! जो अ़रबी न हो वोह अ़जमी कहलाता है जैसा कि हम लोग अ़जमी हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/490)

सुवाल : इस शे'र का क्या मत़लब है ?

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 19)

जवाब : "वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा" या'नी ऐ मेरे मुर्शिद ! ऐ मेरे ग़ौसे पाक ! आप की भी क्या शान है ! क्या मक़ाम है ! और क्या मर्तबा है ! आप का मर्तबा बड़ा ऊंचा है। "ऊंचे ऊंचों के सरों से है क़दम आ'ला तेरा" या'नी ऐ मेरे ग़ौसे पाक ! आप का सरे मुबारक नहीं बल्कि क़दमे मुबारक ऊंचे ऊंचों से आ'ला है। यहां "ऊंचे ऊंचों" से मुराद औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم हैं, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुराद नहीं है। औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم में ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बहुत आ'ला मक़ामो मर्तबा है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/423)

सुवाल : क़ादिरी का क्या मत़लब है ?

जवाब : सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का नाम अ़ब्दुल क़ादिर है, तो जो शख़्स आप के सिल्सिले में मुरीद हो उसे आप के नाम की निस्बत से क़ादिरी कहा जाता है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/525)

सुवाल : क्या ग़ौसे पाक का मुरीद होना क़ुरआने पाक से साबित है ?

जवाब : वसीला तलाश करना क़ुरआने पाक से साबित है जैसा कि पारह 6 **सूरए माइदह** की आयत नम्बर 35 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ﴾ (پ6، المائدۃ:35) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो।" इस आयते मुबारका को उ़लमाए ह़क़ ने किसी को पीर बनाने की दलील बनाया है। ज़ाहिर है पीर ख़ुदा या नबी नहीं होता बल्कि जिस को हम पीर

बनाते हैं वोह हमें **अल्लाह** पाक की बारगाह में पहुंचाने वाला एक वसीला और ज़रीआ़ होता है तो इन मा'नों पर क़ुरआन से साबित है। सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर बैअ़तें ली हैं जैसे बैअ़ते रिज़्वान येह बहुत मश्हूर बैअ़त है, जो थोड़ी बहुत मा'लूमात रखता है उसे बैअ़ते रिज़्वान के बारे में मा'लूम होता है। इसी त़रह़ बा'ज़ मवाक़ेअ़ पर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी से इस बात पर बैअ़त ली कि वोह किसी से सुवाल नहीं करेंगे।[1] और किसी से यूं बैअ़त ली कि दुन्या से दूर रहेंगे। इस त़रह़ की बैअ़तों का ज़िक्र अह़ादीसे मुबारका में मौजूद है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/429)

ज़मानए क़दीम से बैअ़त का सिल्सिला जारी है

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم से बैअ़त का सिल्सिला क़दीम ज़माने से चला आ रहा है, यहां तक कि हमारे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मश्हूर बुज़ुर्ग हैं और आप की बुज़ुर्गी का इन्कार शायद कोई भी नहीं करेगा। मगर आप के भी पीर साह़िब थे जिन का नाम ह़ज़रते शैख़ अबू सईद मुबारक मख़्ज़ूमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه है। (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या, स. 96) ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के बहुत से ख़लीफ़ा थे, जिन में ह़ज़रते शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه सब से पहले ख़लीफ़ा थे, इन के इ़लावा भी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के बहुत से ख़ुलफ़ा थे, फिर इन ख़ुलफ़ा के भी आगे ख़ुलफ़ा थे तो यूं आज तक क़ादिरी सिल्सिला चला आ रहा है। ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से आगे चलें तो शैख़ अबू सईद मुबारक मख़्ज़ूमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के पीर थे, फिर

1... जिन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से सुवाल न करने की बैअ़त ली गई थी उन में से एक ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه भी थे। (ابوداود، 2/169، حدیث:1642 ماخوذاً)

आगे इन के भी पीर साहिब थे, यहां तक कि मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी हमारे पीरों में से हैं। इसी त़रह़ ह़ज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी हमारे पीरों में से हैं, हमारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मशाइख़ से इस त़रह़ सिल्सिला चलता चलता ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तक पहुंचता है और फिर इन के पीर साहिब ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه हैं और फिर इन के वालिदे मोह़तरम मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه इन के पीर हैं और फिर मौला मुश्किल कुशा رَضِیَ اللهُ عَنْه सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा थे तो येह सिल्सिले की सूरत में कड़ी से कड़ी मिली हुई है, इस का इन्कार बुज़ुर्गों ने नहीं किया, अब भी उम्मत की ग़ालिब बल्कि अग़लब और अक्सरिय्यत इस चीज़ को मानती है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/429, 430)

सुवाल : ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के वालिद साहिब को जंगी दोस्त क्यूं कहा जाता है ?

जवाब : ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के वालिद साहिब اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने में आगे आगे थे, गुनाह देख कर इन को बरदाश्त नहीं होती थी। मक्तबतुल मदीना की किताब "ग़ौसे पाक के ह़ालात" सफ़ह़ा 16 पर है कि ह़ज़रते अबू सालेह़ सय्यिद मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का लक़ब "जंगी दोस्त" इस लिये हुवा कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ास **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये अपने नफ़्स को मारते और इ़बादत में काफ़ी कोशिश करने वाले और रियाज़त करने वाले थे, नेकी के कामों का हुक्म करने और बुराई से रोकने के लिये मश्हूर थे,

इस मुआ़मले में अपनी जान तक की भी परवा न करते थे। एक दिन आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जामेअ़ मस्जिद को जा रहे थे कि ख़लीफ़ए वक़्त के चन्द मुलाज़िम शराब के मटके निहायत ही एह़तियात़ से सरों पर उठाए जा रहे थे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने जब उन की त़रफ़ देखा तो जलाल में आ गए और उन मटकों को तोड़ दिया। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के रो'ब और बुज़ुर्गी के सामने किसी मुलाज़िम को दम मारने की जुर्अत न हुई, या'नी वोह कुछ बोले बिग़ैर चुपचाप चले गए तो उन्हों ने ख़लीफ़ए वक़्त (या'नी उस वक़्त के बादशाह) के सामने इस वाक़िए़ का इज़्हार किया और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ख़िलाफ़ ख़लीफ़ा को उभारा, तो ख़लीफ़ा ने कहा कि सय्यिद मूसा (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) को फ़ौरन मेरे दरबार में पेश करो। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दरबार में तशरीफ़ ले आए। ख़लीफ़ा उस वक़्त ग़ैज़ो ग़ज़ब से (या'नी ग़ुस्से में भरा हुवा) कुरसी पर बैठा हुवा था, ख़लीफ़ा ने ललकार कर कहा : आप कौन थे जिन्हों ने मेरे मुलाज़िमीन की मेह़नत को राएगां (या'नी बरबाद) कर दिया ? ह़ज़रते सय्यिद मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं मोह़्तसिब (या'नी ख़िलाफ़े शर्अ़ बातों की मुमानअ़त करने वाला) हूं और मैं ने अपना फ़र्ज़े मन्सबी अदा किया है। ख़लीफ़ा ने कहा : आप किस के हुक्म से मोह़्तसिब मुक़र्रर किये गए हैं ? ह़ज़रते सय्यिद मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने रो'बदार लहजे में जवाब दिया : जिस के हुक्म से तुम हुकूमत कर रहे हो। या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे मोह़्तसिब मुक़र्रर किया है कि मैं तुम लोगों का एह़तिसाब करूं और तुम्हें बुराइयों से रोकूं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इस इर्शाद पर ख़लीफ़ा पर ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि घुटनों पर सर रख कर बैठ गया और थोड़ी देर के बा'द सर उठा कर आ़जिज़ी के साथ

बोला : हुज़ूरे वाला ! اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَرِ या'नी नेकी की दा'वत देने और गुनाह से रोकने के इलावा मटकों को तोड़ने में क्या हिक्मत है ? फ़रमाया : तुम्हारे हाल पर शफ़्क़त करते हुए नीज़ तुम को दुन्या व आख़िरत की रुस्वाई और ज़िल्लत से बचाने की ख़ातिर। ख़लीफ़ा पर आप की इस हिक्मत भरी गुफ़्तगू का बड़ा असर हुवा और मुतअस्सिर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : आ़लीजाह ! आप मेरी त़रफ़ से भी मोहतसिब के ओ़हदे पर मामूर हैं या'नी मैं ने भी आप को मोहतसिब बनाया है। ह़ज़रत चूंकि ग़ौसे पाक के वालिद थे, मुतवक्किलाना अन्दाज़ में फ़रमाया : जब मैं **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से मामूर (या'नी मुक़र्रर किया गया) हूं तो फिर मुझे ख़ल्क़ (या'नी मख़्लूक़) की त़रफ़ से मामूर होने की क्या ज़रूरत है। उसी दिन से आप ''जंगी दोस्त'' के लक़ब से मश्हूर हो गए। (सीरते ग़ौसुस्सक़लैन, स. 52)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/458, 460)

सुवाल : एक ना'रा लगाया जाता है : ''दम दमा दम दस्त गीर'' इस का क्या मत़लब है ?

जवाब : दम का मा'ना है सांस, तो इस का मत़लब हुवा कि सांस ब सांस मेरे ग़ौसे पाक हैं या'नी हर हर सांस में मेरे ग़ौसे पाक का ज़िक्र है। दम का एक मत़लब वक़्त भी होता है तो इस के मुत़ाबिक़ मत़लब होगा कि हर वक़्त ग़ौसे पाक का ज़िक्र है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/517)

सुवाल : ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का फ़रमान है : ''मेरा येह क़दम तमाम औलिया की गरदनों पर है'' इस का क्या मत़लब है ?

जवाब : बग़दाद शरीफ़ में जब बरसरे मिम्बर येह वाक़िआ़ हुवा और मुर्शिदे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि "قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه" या'नी मेरा येह क़दम हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर है।" तो सब से पहले ह़ज़रते शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जो ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सब से पहले ख़लीफ़ा हैं (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 402) येह आगे बढ़े और आप का क़दम अपनी गरदन पर रख लिया। (بہجۃ الاسرار، ص32 ماخوذاً) इसी त़रह़ जिस वक़्त येह वाक़िआ़ हुवा उस वक़्त हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ुरासान की पहाड़ियों में इ़बादत के लिये मौजूद थे, आप ने जब ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का येह ए'लान सुना तो अ़र्ज़ की : (आप का क़दम सिर्फ़ मेरी गरदन पर ही नहीं) बल्कि मेरे सर पर भी है और मेरी आंखों पर भी है। (तफ़रीहुल ख़ातिर (मुतर्जम), स. 73) कुछ सालों पहले टेलीफ़ोन के ज़रीए़ बयान Relay (नश्र) होता था, आज के दौर में Telecast (या'नी T.V के ज़रीए़ नश्र) होता है, जब कि मेरे मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान रूह़ानी Connection (तअ़ल्लुक़) के ज़रीए़ Relay होता था, न कोई तार होती थी और न ही बर्क़ी आलात होते थे। बा'ज़ औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم अपने आस्तानों पर बैठ कर लोगों को जम्अ़ कर के ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान सुना करते थे। ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सरापाए करामत थे, आप की इतनी करामात हैं कि और किसी वली की इतनी करामात नहीं मिलतीं। ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मजलिस और आप के वा'ज़ की धूमधाम थी जिस की त़वील रिवायतें हैं।

जिसे शक हो वोह ख़िज़्र से पूछ देखे तेरी मजलिसों का समां ग़ौसे आ'ज़म

(क़बालए बख़्शिश, स. 182)

बहर ह़ाल ! ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ का क़दम औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ ने ज़ाहिरी त़ौर पर भी अपनी गरदन पर लिया और बात़िनी त़ौर पर भी लिया, क़ियामत तक आने वाले तमाम औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہِم की गरदनों पर आप का क़दम है। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/268 माख़ूज़न)

सरों पर जिसे लेते हैं ताज वाले तुम्हारा क़दम है वोह या ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त, स. 183) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/347, 348)

सुवाल : ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ की ग़रीबों से मह़ब्बत का कोई वाक़िआ़ सुना दीजिये।

जवाब : मेरे मुर्शिदे पाक, शहन्शाहे बग़दाद हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ ह़ज के ज़माने में एक मह़ल्ले में रुके और बड़ा अ़जीबो ग़रीब हुक्म दिया कि "सारी बस्ती में सब से ज़ियादा ग़रीब आदमी का घर तलाश करो !" जब तलाश कर लिया गया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ ने उस ग़रीब घराने से उन के घर में रुकने की इजाज़त मांगी, उन लोगों की क़िस्मत जाग उठी और उन्हों ने इजाज़त दे दी। बस्ती के बड़े बड़े और मालदार लोगों ने बड़े बड़े क़ीमती तह़ाइफ़ जैसे गाय, बकरियां, अनाज और सोना चांदी वग़ैरा का एक अम्बार नज़राने के त़ौर पर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ की बारगाह में पेश किया और अपने घर तशरीफ़ लाने की अ़र्ज़ भी की, लेकिन आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ ने उस ग़रीब का घर छोड़ कर कहीं और जाने से मन्अ़ फ़रमा दिया, इतना ही नहीं वोह सारे तह़ाइफ़ उस ग़रीब घराने को अ़त़ा फ़रमा दिये और सह़री के वक़्त वहां से तशरीफ़ ले गए। यूं मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ के रात का कुछ ह़िस्सा गुज़ारने की बरकत से वोह ग़रीब घराना मालदार हो गया। (اخبار الاخیار، ص18)

इस हिकायत से येह मदनी फूल मिलता है कि हमारे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ग़रीबों से बहुत महब्बत रखते थे, इस लिये हमें भी चाहिये कि हम ग़रीबों से महब्बत करें और उन्हें धुत्कारने से बचें। हमारे घर दा'वत हो तो पहले ग़रीब के आगे खाना रखें और उसे इज़्ज़त की जगह दें। हमारे हां ग़रीबों की तरकीब थोड़ी आउट होती है, इन बेचारों को कोई लिफ़्ट नहीं करवाता, लेकिन अगर कोई मालदार सेठ हो तो उस की ख़ूब आव भगत की जाती है, हालां कि सेठ एक नमाज़ नहीं पढ़ता होगा, (नमाज़े) जुमुआ में भी गोल हो जाता होगा, जब कि ग़रीब पांचों नमाज़ें पढ़ने वाला होगा और उस की पेशानी पर नमाज़ का निशान भी जगमगा रहा होगा, लेकिन ऐसे को कोई लिफ़्ट नहीं करवाई जाएगी। अगर हम ने किसी ग़रीब के साथ ऐसा किया और उस को क़ियामत में कोई मक़ाम मिल गया तो फिर हम क्या करेंगे !! हम सब को ग़रीबों का ख़याल रखना चाहिये।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/368)

कभी तो ग़रीबों के घर कोई फेरा ! हमारी भी क़िस्मत जगा ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 552)

सुवाल : ग़ौसे पाक हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की कोई करामत सुना दीजिये।

जवाब : हज़रते शैख़ इस्माईल رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के खजूर के दो दरख़्त थे, मगर चार साल से उन पर फल नहीं लग रहे थे। एक मरतबा शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ वहां तशरीफ़ लाए और उन में से एक दरख़्त के नीचे वुज़ू फ़रमाया और दूसरे दरख़्त के नीचे दो रक्अ़त नमाज़ अदा की, जिस की बरकत से देखते ही देखते दोनों

दरख़्त हरे भरे हो गए और उसी हफ़्ते में उन में फल भी निकल आए ह़ालां कि येह फल का मौसिम नहीं था। उन दरख़्तों की कुछ खजूरें मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में पेश की गईं, आप ने खाने के बा'द दुआ़ फ़रमाई तो ह़ज़रते शैख़ इस्माईल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़मीन, गन्दुम, पैसों और जानवरों में बरकत ही बरकत हो गई। (بهجة الاسرار، ص91) इस ह़िकायत से पता चला कि **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों की दुआ़ में बरकत होती है और नेक बन्दे लोगों की मुश्किलें ह़ल कर देते हैं। येह भी याद रहे कि हमें **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों से सिर्फ़ दुन्या की बेहतरी की दुआ़ नहीं करवानी चाहिये बल्कि दुन्या के साथ साथ आख़िरत की बेहतरी, बुरे ख़ातिमे से ह़िफ़ाज़त और जन्नत में बे ह़िसाब दाख़िले की दुआ़ भी करवानी चाहिये। **अल्लाह** पाक ने हमें क़ुरआने करीम में बहुत ही प्यारी दुआ़ सिखाई है जिस में दुन्या और आख़िरत की भलाई मांगने का ज़िक्र है, चुनान्चे इर्शाद होता है :

﴿رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾ (پ2، البقرة:201)

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा)।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/410)

सुवाल : ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रोज़ाना 1000 नवाफ़िल पढ़ा करते थे। क्या येह आप की करामत में शुमार होगा ?

जवाब : जी हां ! इस लिये कि आ़म आदमी 1000 रक्अ़त नवाफ़िल नहीं पढ़ सकता, रात ख़त्म हो जाएगी, येह करामत है। बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का "एक रात में पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म कर लेना, एक पाउं पर खड़ा

रह कर क़ुरआने करीम ख़त्म कर लेना और रोज़ाना 30 हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ लेना'' येह सब करामतें होती हैं। ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब घोड़े पर बैठने के लिये आते थे तो एक रिकाब से दूसरे रिकाब में पाउं रखने के वक़्फ़े में पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म फ़रमा लेते थे, (مرقاۃ المفاتیح، 9/706، تحت الحدیث:5718) हालां कि येह एक सेकन्ड का वक़्फ़ा होगा। येह आप की करामत थी। ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام मा'मूली वक़्फ़े में ''ज़बूर शरीफ़'' पूरी ख़त्म कर लेते थे, (بخاری، 2/447، حدیث:3417) हालां कि क़ुरआने करीम के मुक़ाबले में ''ज़बूर शरीफ़'' की ज़ख़ामत शायद कई गुना ज़ियादा थी। (फ़तावा रज़विय्या, 7/477 माख़ूज़न) येह आप عَلَیْہِ السَّلَام का मो'जिज़ा था। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/33, 34)

सुवाल : वोह वाक़िआ़ इर्शाद फ़रमा दीजिये जिस में ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने मालो दौलत की थेलियों से ख़ून निकाला था।

जवाब : एक बार एक ख़लीफ़ा ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के पास बत़ौरे नज़राना अश्रफ़ियों की 10 थेलियां ले आया, आप ने फ़रमाया : ''मैं इन की ह़ाजत नहीं रखता'' और क़बूल करने से इन्कार फ़रमा दिया, उस ने बड़ी आ़जिज़ी की, तब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने एक थेली अपने दाएं हाथ में पकड़ी और दूसरी थेली बाएं हाथ में पकड़ी और दोनों थेलियों को हाथ से दबा कर निचोड़ा तो वोह दोनों थेलियां ख़ून हो कर बह गईं, आप ने फ़रमाया : ''ऐ अबुल मुज़फ़्फ़र ! क्या तुम्हें **अल्लाह** का ख़ौफ़ नहीं कि लोगों का ख़ून लेते हो और मेरे सामने लाते हो !'' वोह आप की येह बात सुन कर ह़ैरानी के आ़लम में बेहोश हो गया।

(بہجۃ الاسرار، ص120) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 176, स. 6)

सुवाल : हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मज़ीद कोई करामत बता दीजिये ।[1]

जवाब : एक बार कुछ ऐसे लोग जिन की सोच औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के बारे में अच्छी नहीं थी, दो टोकरे ले कर हमारे ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और पूछा : इन दोनों में क्या है ? आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी कुरसी से उतर कर एक टोकरे पर अपना हाथ मुबारक रखा और फ़रमाया : इस में बीमार बच्चा है । फिर अपने बेटे ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को उसे खोलने का हुक्म दिया, जब वोह टोकरा खोला गया तो उस में से वाक़ेई एक बीमार बच्चा निकला जो मा'ज़ूर था, आप ने उसे पकड़ कर फ़रमाया : ''قُمْ بِاِذْنِ اللّٰه या'नी **अल्लाह** पाक के हुक्म से उठ'' तो वोह उठ कर खड़ा हो गया । फिर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने दूसरे टोकरे पर हाथ रख कर फ़रमाया : इस में सिह़्ह़त मन्द बच्चा है । फिर उस टोकरे को खोलने का हुक्म दिया जैसे ही टोकरा खोला गया तो उस में से वाक़ेई एक सिह़्ह़त मन्द बच्चा निकला और वोह उठ कर चलने लगा । आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की येह करामत देख कर उन लोगों ने अपनी बुरी सोच से तौबा कर ली । (بہجۃ الاسرار، ص124)

इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा : ❀ औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم की बड़ी शान होती है ❀ **अल्लाह** करीम ने उन्हें ऐसी त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है कि वोह टोकरे को खोले बिग़ैर येह बता सकते हैं कि इस के अन्दर क्या है ? ❀ वोह जब चाहते हैं **अल्लाह** पाक की इ़नायत से बीमार को अच्छा

1... येह सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की जानिब से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत ही का अ़त़ा फ़रमूदा है ।

कर देते हैं ❀ वोह शख़्स बहुत बुरा है जो **अल्लाह** पाक के औलियाए किराम رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم के बारे में ग़लत़ सोच रखता है। **अल्लाह** पाक हमें ऐसी ग़लत़ सोच से बचाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/366)

सुवाल : ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ का ख़्वाब में कैसे दीदार हो सकता है ?

जवाब : जिस चीज़ का ज़ियादा ज़िक्र हो और जिस चीज़ को हम ज़ियादा याद करें तो बारहा ऐसा होता है कि वोह चीज़ ख़्वाब में भी आ जाती है। इस लिये ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ का तज़्किरा करें, उन्हें याद करें, उन को ईसाले सवाब करते रहें और उन के नक़्शे क़दम पर चलते रहें, اِنۡ شَآءَاللّٰہ कभी न कभी करम हो ही जाएगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/305)

सुवाल : क्या ग़ौसे पाक की तस्वीर घर में लगा सकते हैं ?

जवाब : नहीं लगा सकते। ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की जो तस्वीर बताई जाती है वोह फ़र्ज़ी तस्वीर है, उस में दाढ़ी भी छोटी दिखाते हैं, अगर दाढ़ी पूरी भी दिखाएं तब भी किसी की तस्वीर फ़्रेम करवा कर घर में लगाना गुनाह है, अपने मां बाप की या अपने पीर साहिब की तस्वीर भी नहीं लगा सकते। बा'ज़ लोग जानवरों मसलन गधा, घोड़ा वग़ैरा की तस्वीर शो पीस के तौ़र पर लगाते हैं येह भी नहीं लगा सकते, घर में जानदार की तस्वीर लगाने से रह़मत के फ़रिश्ते नहीं आएंगे। (بخاری، 2/385، حدیث:3225 ماخوذاً) अलबत्ता सब्ज़ गुम्बद या का'बे शरीफ़ की तस्वीर लगा सकते हैं, नीज़ टीवी पर जो तस्वीर नज़र आती है इस को डीजीटल फ़ोटो बोलते हैं येह शुआ़एं हैं जो नज़र आती हैं और चली जाती हैं, येह वोह तस्वीर नहीं है (जो

मन्अ़ है) इसी त़रह़ आईने में जो अ़क्स नज़र आता है वोह भी तस्वीर के हुक्म में नहीं है।

(T.V और मूवी, स. 24) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 157, स. 7)

सुवाल : "ग़ौसे आ'ज़म का बन्दा" कहना कैसा ? जब कि बन्दा तो **अल्लाह** का ही होता है।

जवाब : कोई ह़रज नहीं ! बन्दा के कई मा'ना हैं, मसलन ख़ादिम, ग़ुलाम, आदमी। नीज़ पंजाबी में भी आदमी को बन्दा कहते हैं, लेकिन ए'तिराज़ सिर्फ़ "ग़ौस का बन्दा" कहने पर ही क्यूं ?

(इस मौक़अ़ पर मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया :) मुस्दरक लिल ह़ाकिम के ह़वाले से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़दीसे मुबारका नक़्ल फ़रमाई है कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी में आप का ख़ादिम और आप का बन्दा था। (مستدرک حاکم، 1/332، حدیث:443, फ़तावा रज़विय्या, 24/667)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 188, स. 3)

सुवाल : या सय्यिदी ! इस शे'र की वज़ाह़त फ़रमा दीजिये :

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उस को शफ़ीअ़ जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 18)

जवाब : इस शे'र में आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़र्ज़ कर रहे हैं कि **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप की बारगाह में उस हस्ती (या'नी शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) की सिफ़ारिश और वसीला पेश कर रहा हूं जो मेरे तो ग़ौस या'नी फ़रियाद सुनने वाले,

हमदर्द और ग़म ख़्वार हैं, लेकिन आप के बेटे हैं। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने बेटे के सदक़े में मेरी बिगड़ी बना दीजिये।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/262)

सुवाल : हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का उ़र्स मुबारक किस तारीख़ को होता है ?

जवाब : सय्यिदी व मुर्शिदी हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का विसाले बा कमाल 11 रबीउ़ल आख़िर को हुवा था। (तफ़रीहुल ख़ातिर (मुतर्जम), स. 154) इस लिये इस तारीख़ को आप का यौमे उ़र्स मनाया जाता और ईसाले सवाब किया जाता है। हम इन 11 दिनों में मदनी मुज़ाकरा कर रहे हैं जिस से नेकी की दा'वत पहुंच रही है और इल्मे दीन ह़ासिल हो रहा है, اِنْ شَآءَالله कई लोग नेकी के रास्ते पर आ जाएंगे और गुनाहों से ताइब हो कर नमाज़ी बन जाएंगे।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/306)

जीलानी नुस्ख़ा : रबीउ़ल आख़िर की ग्यारहवीं रात तीन खजूरें ले कर एक बार सूरतुल फ़ातिह़ा, एक मरतबा सूरतुल इख़्लास, फिर ग्यारह बार يَاشَيْخ عَبْدَ الْقَادِرْجِيلَانِى شَيْئًا لِلّٰهِ اَلْمَدَد (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर एक खजूर पर दम कीजिये, इस के बा'द इसी त़रह़ दूसरी और तीसरी खजूर पर भी पढ़ पढ़ कर दम कर दीजिये, येह खजूरें रातों रात खाना ज़रूरी नहीं, जो चाहे जब चाहे जिस दिन चाहे खा सकता है। اِنْ شَآءَالله पेट की हर त़रह़ की बीमारी के लिये मुफ़ीद है। (जिन्नात का बादशाह, स. 20)

अगले हफ़्ते का रिसाला